

जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत

- पियाजे: स्विस मनोवैज्ञानिक, बाल विकास के प्रमुख सिद्धांतकार
- उनका सिद्धांत: बच्चे अपने अनुभवों से ज्ञान का निर्माण करते हैं (Constructivism)
- विकास क्रमबद्ध चरणों में होता है



संज्ञानात्मक विकास की मुख्य अवधारणाएँ

- स्कीमा (Schema): ज्ञान की मानसिक संरचना
- Assimilation (अभिग्रहण): नई जानकारी को पुराने स्कीमा में जोड़ना
- Accommodation (अनुकूलन): नई जानकारी के अनुसार स्कीमा बदलना
- Equilibration (संतुलन): संतुलन बनाने की प्रक्रिया



1. संवेदी-गत्यात्मक चरण (Sensorimotor Stage) – जन्म से 2 वर्ष

- शिशु अपने इंद्रिय व क्रियाओं से दुनिया को समझता है
- Object Permanence का विकास – वस्तु दिखाई न दे तब भी मौजूद मानी जाती है



2. पूर्व-संचालन चरण (Pre-operational Stage) – 2 से 7 वर्ष

- प्रतीकात्मक सोच का विकास
- भाषा का तीव्र विकास
- स्वकेन्द्रियता (Egocentrism): बच्चे दूसरों का दृष्टिकोण नहीं समझ पाते
- Conservation कौशल का अभाव



3. ठोस-संचालन चरण (Concrete Operational Stage) – 7 से 11 वर्ष

- तार्किक सोच का विकास
- Conservation, Reversibility जैसी मानसिक क्षमताएँ विकसित
- बच्चे वास्तविक स्थितियों पर तर्क कर सकते हैं



4. औपचारिक-संचालन चरण (Formal Operational Stage) – 12 वर्ष से आगे

- अमूर्त (abstract) सोच विकसित
- Hypothetical reasoning की क्षमता
- समस्या समाधान क्षमता में वृद्धि



पियाजे सिद्धांत की विशेषताएँ

- बच्चे सक्रिय सीखने वाले हैं
- सीखना क्रमिक तथा चरणबद्ध है
- बालक अनुभव और परिवेश से ज्ञान बनाता है



सिद्धांत की सीमाएँ

- चरणों के आयु-सीमा कठोर नहीं
- कुछ कौशल पियाजे के बताए समय से पहले भी विकसित हो जाते हैं
- सामाजिक व सांस्कृतिक प्रभावों की कम चर्चा



शिक्षण में पियाजे सिद्धांत का उपयोग

- Activity-based learning
- Problem-solving व Discovery learning पर ज़ोर
- बच्चों की उम्र व विकास स्तर के अनुसार शिक्षण
- समूह कार्य, प्रयोगात्मक गतिविधियाँ



निष्कर्ष

- पियाजे का सिद्धांत बाल विकास के अध्ययन का आधार
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को वैज्ञानिक रूप देता है
- बच्चे कैसे सीखते हैं, इसका सबसे प्रभावी मॉडल

